

1

श्रीराम ॥ ऐसा संग्राम बहु तमा उला ॥ विरे विर २ २ पा सि आला ॥ हे देखो निवीर पा स्य बो लील ॥
 सारथि पा प्र ति ॥ १ ॥ ह्मणे दोर वि क्रमेशान वाम गि ॥ नेरु स्य दळ पा उिले रण रंगी ॥ तया ते द्या लु मि
 पृष्ठी जागी ॥ २ ॥ रथु नेर पुढारा ॥ ३ ॥ ऐसे विरु पा स्य बो ली सरे ॥ न व सार थिये सो उिले वा द्दारे ॥ सा रवा
 रुवा दे उ नि त्वे रे ॥ ते चाल विले पुढे ॥ ४ ॥ रा स्ये स दळ पा लु नि मा गे ॥ ५ ॥ रथु से पा बला का त वे गे ॥ पुढे सु गि
 वा सि प्र सं गे ॥ सं ग्राम मां उिला ॥ ६ ॥ २ वना प्रथ मा र संग्रामी ॥ विरु पा क्ष रा हिला लं का म अ गु ति ॥
 त्या सि प्र ति म द्द र पा सु मि ॥ सु ग्री व रा हिला हा ता ॥ ७ ॥ तो वि विरु पा क्ष यु
 द्वा आ ला ॥ हे खो नि सु ग्री व ह्मणे चला ॥ ८ ॥ प उ ला सि आ जी ॥ ९ ॥ बहु ता सं ग्रामा वा से व ती ॥ वि
 रु पा क्ष्यार ण भु मि तळ व ती ॥ तु ज म ज ला र्हा से ती ॥ जे सी सर्पा सु पर्णा सि ॥ १० ॥ आ ना जी वा वि
 आ शा ॥ सां डि रे कु बु द्वि रा क्षे सा ॥ व्या प्रा चिये र था व प भ जे सा ॥ बळे आ ला अंतः का की ॥ ११ ॥
 ऐ सी सु गि वा चि व वणे ॥ विरु पा क्षा सि ला ग ली अ ति ती क्ष पो ॥ ह्मणे बो ली ला सि जे ने व र ने
 ते सा च कृ रि व ही ला ॥ १२ ॥ तु फु ग ला सि आ पु ले ति बळे ॥ व था पु ष्ट मां सा ग ळे ॥ कुं म कृ णा चि
 नि कृ क्षा म ळे ॥ मळ ला अ स सी ॥ १३ ॥ प्र थ म ल के च गे पु री ॥ लं के रा ना उ ला सि ल ता प्र हरी ॥
 इं द जि ते बहु ता वे की पृ थि व रि ॥ मृ स्य प शु प्रा य पा उ ला सि ॥ १४ ॥ तु सि या बंधु ने तु ज ला गी ॥

2

ब्रह्म त विटं न ना के लि ज गि ॥ मये पबो निरा हिला सिनु चि शृंगी ॥ मा तां ग गिरि शी या ॥ १२ ॥ पत्नी तु
 सी पाले रवा र्ग ॥ नाम आ इ क तो ति चे ता रा ॥ ति चे प्र थ म यो व न सौ ॥ से विले वा ळी वा न रे ॥ १३ ॥
 पर उ उ ष वि र्म वि टा बिली ॥ ते उत्तर व रं नु ज प्रा य जा ली ॥ जे सि जि नां गी स म र्थे सां डिली ॥ ते नि
 र्गो ग्य ले र्ग ला ॥ १४ ॥ म र ण पा व ला तु सा के पु ला स ना म त या ची व धु ॥ ते नां से विली वि धि नि शु धु ॥
 तु ह्या म र्क टा सि ना ही ॥ १५ ॥ ऐ से वि रु पा क्षा चे नि बो ले ॥ सु ग्रि वा चे ह द ये मं ग ले ॥ द श न वो ळी रो उ मि
 उप डिले ॥ चं उ वि ज्ञा ळ र क्षा सि ॥ १६ ॥ वै न ला अ स ता म हार थि वि रु पा क्षा सु ग्रि वं सा डिला
 न या व रि र क्षु ॥ त वे ये नां दु रु नि ने स य द क्षा सं धान करि तां जाला ॥ १७ ॥ व्यो मं चू बि त ना वि ज्ञा ळु ॥
 शा र्वा कि त र क्ष पा ल्का ळु ॥ छे दु न सां डिले न ला ग तां वै कु ॥ अज्ञान भ्र मु जे सा ॥ १८ ॥ क पि च
 स वे चिते का ळी ॥ ळी ळा फि र विली करु ळी ॥ उ नी मि म आ रो ळी ॥ छे वे ह्य पो नि टा ळिली ॥ १९ ॥
 ते चं उ ळि वा च का का र ॥ भ्र म त आ लि स मो र ॥ दे खो नि वि रु पा क्षे श र ॥ सो डिले शु ळ मु र वा ॥ २० ॥
 ते हि वा पि ते ळि वा चं उ अं व रि के लि श न र वं उ ॥ सा चे नि र वं डि उ र्दं उ ॥ वि र वे था पा व ले ॥ २१ ॥ स
 वे चि वि रु पा क्षे सा ध के सु ग्रि वा व रि ळ वा धि के ॥ श र सो डिले मा हा त व के का ळ व द न स र के
 ते सं धान सा हो नि म ग ॥ क पि च उ प डिले शी ल शृ ग ॥ जे से य थार्थ अ र्थां ग ॥ मं दान वा चे ॥ २३ ॥

2A

नेभ्रमउनिभुजाबळे॥विरुपाक्षलसिलाक्रोधानके॥उजेनियकिलेविनाके॥सिंहंनारजाके
 रेखोनिराक्षससंधानकरि॥तवशिरवरबेसलेरथावरि॥रथासहितत्यानितरि॥विरुपाक्षनि
 माला॥१५॥तेसेरजाशिरदेखिलेउवा॥दुरवभयेउपजलाकाटावा॥रूपेआहारेकर्मासबका
 रिसेकायकेले॥१६॥जोकेदाटलानैकेभ्ररु॥तवेचिकरिविचारु॥रूपेदुरवमिकानाचेकरु॥कोन
 आतावाचेल॥१७॥विनाशकावाचेंचवनगाढे॥आरभलेकरीनकेकडे॥येकजातियेकापुढे
 देवाचेदरहरण॥१८॥तेसेरावणेभाउनिशपारंगी॥रूपेघारितीलउरलयालागी॥पुढेयुधम
 नहोतारक्षणभागी॥तयाकडेपाहिले॥१९॥रूपेयुधमनागायेसम३॥म्याजयाशोधरिलीसु
 झाटा३॥आतावेरिवधुनियोंदे३॥उत्तमरुखात॥२०॥तेसेबोलिलीयांलैके३॥युधमतउचेंव
 ळलाआवे३॥रूपेस्वामिमजतुह्यीवहनवृष॥समयालागिपाळिले॥२१॥तरितोसमयोआ
 लाआली॥जाताप्राणवेचिनस्वामिकाजी॥येथेअंतरदेइनतरिगेरवामाजी॥बुडेनपूर्वजांसहित॥
 तेसेयुधमनाचेनिबोले॥रावणासिसुखवाटले॥जेसेघायवडासिप्रासजाले॥उदकृशिनब
 कावनवियांतआहाबलाव्याबु॥तयावरिठळलाअनिबु॥माहापुरिबुडेसासिसाभाबु
 थडियेवाबोलिला॥२२॥कीअसाधरोमिपोकारणे॥वैद्यवरवेकरिनरूपे॥तेसेरावनासि

3

युधन्मत्तावेवैसे ॥१५॥ पाहातु असे नैरुयनाथु बोलत बोलत पुरुषार्थु युधन्मतेने लारधु
 सेनामुखमंडळी ॥१६॥ धात्राव रि हातवा तला ॥ सनेचिभुज आ फजिला ॥ सीहंनारे सुयिव हा
 किला ॥ लाउ निया चापिडास ॥१७॥ ह्यपोरे कपिभ लीसाधिली वेळ ॥ विरुपाक्षवधेम ह्वडलाक
 हुसाल ॥ जानादि धलीतुज सेल ॥ संग्राम तुंडण करि ॥१८॥ ऐसे ऐकोनि वानरे श्वरे ॥ युद्धाला गि
 होरजे पुठारे ॥ ह्यपोरे बरळता निगा चर ॥ परण काळी तुळी ॥१९॥ धावंध्या वळी चिसुमने ॥ तैसि वि
 फळतुमचि वचणे ॥ ब्रथा पाळिले तिदुशा नने ॥ आज नमपरियंत ॥२०॥ रणदेवते चर पाभूमी ॥ सा
 सभसकाचि व्हाकी धनी ॥ तुळ्यास ह्येस तडुवा राउनी ॥ जावपापरियंत मांडली ॥२१॥ ऐसे सुयि
 वजो लो निराहे ॥ तव युधन्म तक्षणे सरिसा ॥ पुष्टी देउन कोरे साहे ॥ संधान सुटले मासे ॥२२॥
 ऐसे बोलो नि युधन्मते ॥ सोडिली ती क्षण ॥ राग वा राते ॥ जेला गत क्षणी पर्वनाते ॥ चाळनी व
 रुडो कती ॥२३॥ अतिवेगे सुसाट पोरो ॥ उर्धधा विनले आकाश ॥ ते सुयि वावरि पडले जैस
 गिधा वेअधोचं ॥२४॥ लागलियां शुळराची मुखे ॥ साहिले सुयिवे विरश्रीयेचे नितवळे ॥
 जैसि विवेकी याने संसार दुःखे ॥ प्रासजालिया वरि ॥२५॥ कीतारुप्य दशमध्ये ब्रह्मचारि ॥ ल
 गतिकाम शर परिहृदरुन धरि ॥ नाना सर्पला गले प्रल्हाद शरीरि ॥ परिन बाधे चि विखे ॥२६॥

38

ऐसा कपि विरा विरबाहु॥ संधानसाहातुचिकोपलाबहु॥ कुंसावरिउठावलासिंह॥ विरा
 गोवयाकारणे॥ ४७॥ सुसुकारकेलाअतिबुद्धा॥ तेणेधरारिलेआकाश॥ रचकृतेभयभेगक्ष
 म॥ नोमाचेंउभेराहिले॥ ४८॥ पुसेसाटदिधलासुमंडळा॥ दोरेउतुलिलीचंडाका॥ युधन्म
 नासिलसोनिडोळा॥ सोडिलीचक्रचाली॥ स्थितीकायेतयुधन्मतासमोर॥ जैसेचदा
 रिवालिलेराहोचेरार॥ कींवाइंदवरिचेरात्रा॥ वज्रसुरलेजेसेपै॥ कीग्रहगतिसावरि
 विघ्न॥ कीतपत्रियवरिवेसन॥ नानाप्रजविचाराजरेण॥ बाळपनिसुर्याउजु॥ ४९॥ असोसु
 यिवेतिबाएसियापरि॥ सोडिलीजाननकारतेवरिउठावितोरारि॥ भेदिलीशसेसधरे॥ ५०
 ठाकिमुखवागलेबाण॥ तेणेतिबाअंतरिपजाउठुणी॥ बहुतभागजालेतेणेविरगणा॥ बहु
 दुःखपावले॥ ५१॥ वानरेडोतिबायुद्धवाकिले॥ युधन्मतेनिपुळकेले॥ जैसेगजेनिबभ्रनिधि
 उचोळले॥ तेविरारिचंडबायो॥ ५२॥ उपरिसवचियुद्धमाजे॥ तिबादसरिकपिमाजे॥ अनिविच
 मेउर्धसुजे॥ राक्षसावरिठाकीली॥ ५३॥ तेहिभ्रमवभ्रमतगगनी॥ येतायुधन्मनेदेखिलीनु
 यनी॥ जैसेआकाविहनिमेदिनी॥ काळचक्रपउत॥ ५४॥ पहिलेचिसिद्धहोतार॥ तेय
 जिलेबाणकठोर॥ सिधसेडिलेचत्वार॥ राक्षकसंख्या॥ ५५॥ वज्रमुखबाणअवरि॥ आर

(4)

छले येत शिखे वरि। पुढे बाणाचा प्रहार। ताव नृप जालि शिखा ॥५८॥ जंगिले रुस रिये वि
 केते ॥ अधिक दारव विले कथन मते ॥ सिहें नार करुनि आत्म दवाते ॥ आनंद दिधला ॥५९॥ राव
 नेने काळिका हिये क। सखंब विली सुरवा विसुळ क ॥ जैसा गत कामने गियाना वे क ॥ उष्मा ज
 ली ॥ ६० ॥ दोन्ही शिखा गेलिया व्यर्थ ॥ तपो मुन्ये तवाटे कपिनाथ ॥ मग गदा येत ली जिने माथा ॥
 मेनुचा नृप हो उशके ॥ ६१ ॥ क्रोधे वळुचें वळले ॥ पुसपिं जा रुनि आ पूळिले ॥ गदेसी उर्ध्व हस
 साडिले ॥ सिहें नार पेकेला ॥ ६२ ॥ धावीन लाजे सा प्रबय वातु ॥ उठान करुनि दिधला गदा
 घातु ॥ जश्वरथ सार थियुध न्तु ॥ रतु वि यासि लागला ॥ ६३ ॥ तुरंगमाचा संका उजाला ॥
 रथसंगो निविद्य उला ॥ सार थि उलगे निप उला ॥ अव नित बा वरि ॥ ६४ ॥ सुध न्तु तासि
 मुर्खेना आली ॥ इतुकी कपी देर व्यालिकेला ॥ वा नार बाहिनी आनंदली ॥ माहा हतु पेनि भर् ॥
 ऐसे वर्त्तले या उपरी ॥ कथन त होना पृथ्वी ये वरी ॥ मुर्खेना गेलिया उपरी ॥ मग सो भुला पु
 नेरपी ॥ ६५ ॥ पद लता ताडिला व्याळु ॥ की काटियाचा चंबिला शार्धु कु ॥ नाना आज्ये सि पि
 ला व उवानु ॥ धडके बहु साल ॥ ६६ ॥ ऐसिया परियुध न्तु ॥ उठला क्रोधे उचें वळतु ॥
 सुग्रिव धैर्याचा पर्वतु ॥ तया वरिधा विनला ॥ ६७ ॥ जे पाडो लहोति रवे उ ॥ ऐसी को मोदकी

48

प्रचंड ॥ हा हा शब्द उठीते पोतो ॥ पसरले विशाळ ॥ थालो रलाजे सागजा वरिगुलु ॥ तेसा
 संपडला सुगिवां उजु ॥ वक्र उडाला उचलु निभुजु ॥ गरा प्रहारु दिधला ॥ ७ ॥ तो वा वा प
 ताळा गा वरि ॥ सवेचि कपिं दूकै से करी ॥ निजह स्तीग दातिये ची वरी ॥ सेलीला तो पावो ॥ ११ ॥
 समान बळ वीरते दोयही ॥ जलो ठरणौ गना वा ठार ॥ मिउला गले गरा पायि ॥ निर्वाण संया
 मी ॥ २ ॥ ऐसे पाया सरिसे पाय वेगे ॥ निगति हा पाति व मार्गे ॥ मातले विर श्री येचे निरंगे ॥ ता
 उनाचि वेधाही ॥ ७ ॥ गदे चारवन वन ही ॥ शुभिवे श्वां न रु करि वृष्टी ॥ ऐसे पाये से लिताती
 सेवटी ॥ अंगलया दोहि आगदा ॥ ७ ॥ पुढे दोयें वर चक्र ॥ गदा राकु निघेतले शुभ ॥ दोय
 गजेलेतेणे उचये दळ ॥ अयाच कि व जाल ॥ ७ ॥ मारा हिच पो र युद्ध माजले ॥ जैसे पुर्वी रा
 का वत्रा सिजाले ॥ शुभ शुभ चासं पड ॥ फुले ॥ गळाली वै श्वां न राची ॥ ७ ॥ परस्पर दोये ज
 ना पाय देत घेन निर्वाण ॥ पुढे दोयें दोय शुभ चूर्ण ॥ आसुडुनिया वळे ॥ ७ ॥ उपरि दोये आ
 लेत व का ॥ सवेचि वोसु निया दिधला थउका ॥ त्ये उ आ वे शये कमेका ॥ प्रहार हा पाते जाले ॥ ७ ॥
 पायला गति बळे व मी ॥ अति आवेश दोयां जय कमी ॥ दोहिच्या देहा पासा व शुमी ॥ असुद्ध
 वाहत असे ॥ ७ ॥ ऐसे युद्ध होता थोर ॥ दोयें जाले अति जर्जर ॥ पुढे सुगि वे क ठोर ॥ मुष्टी वळ

5

लीक्रेसी ॥ ८० ॥ उडाणा करुनि अंबरी ॥ दिधली युध न्यता चेह दया वरी ॥ पर्वतु पउला पर्वतपा
 ठारी ॥ ऐसा राके उठिला ॥ ८१ ॥ तया मुष्टी पाता सरिसे ॥ अशु द्वे व मिले राक्षेसे ॥ पृथ्वी वरि पउला
 लेसे ॥ उन्मळले जुं बाउ ॥ ८२ ॥ विमड्ड व पुपृथ्वी वरि पउली ॥ जी वन कळा निघो निगेली ॥ जैसे
 मठा तिल माळ वली ॥ प्रकाश लों ति ॥ ८३ ॥ ऐसा युध न्यतरणा सि आला ॥ वानरे राज यो प्रा
 स जाला ॥ नैरुसे रा दुखे दाटला ॥ अंग ठा कि ते रथा वरी ॥ ८४ ॥ जाता जया रा कायसी ॥ विर
 विश आचारणा सी ॥ ये कुम तु रे उँ लो त्या सी ॥ हा वि मारु आहे ॥ ध्या ऐ से भाउ नि ह दया मित रि
 दुःखे पि उतु रथा वरि ॥ तव मत्ते हा वरि धली व क सरी ॥ कौळ यो रा सारि र्की ॥ ध्या र व टा टो पे
 दाखवी पुरुषार्थ ॥ बाण मज्जु निघनु ष्य व र्त्त माथा ॥ उलंघु नि प्रे ता न्या चळथा ॥ रथा उठसे
 पावला ॥ ८५ ॥ रथ रत्न जडित ते ज पुं जुं पोत पता का जें सी या विजु ॥ मिर्वत से च उ ध्व जु
 रा पुंळ वरनु ॥ ८६ ॥ रघि पो उ न्यारि जुं तिले ॥ जैसे अंजनो द के धू त ले ॥ विविधा अळे कारि
 अं गारिले ॥ प्रसंजन वे गा ऐसे ॥ ध्या धुने सार थी बुधि वैतु ॥ विसला अंग राणे गु सु ॥ स्वामि च
 नि मत्ते वाग वितु ॥ वातु रथा सी ॥ ८७ ॥ ऐसा राक्षे सु मत्त नामा ॥ अति उता वेळ से ग्रा मा ॥ तया
 सिरे खो नि साउ मा ॥ सी घजे ग दु उ ठीला ॥ ८८ ॥ तव मत्ते ते समर ॥ सी हं ना दु के ला ते समर ॥

58

रपो गणा च ठार॥ तेणो योरो सब अं ह र ३॥ ध उ क ल ग ली ॥ १३ ॥ ज ग दा सी दे खो नि सु मो र ॥
 म ते सो डि ले पा च रार ॥ ते व ज्ज मुख क ठो र ॥ क क पि सारे सर के ॥ १४ ॥ ते ग ग न आ क मित ॥ जे स धा
 व ति मृ त्या वे दु त ॥ जे ग दा वे रे हो अ क स्मा त ॥ ये उ नि या क उ त र ले ॥ १५ ॥ जे सा क्रा मी क र्से द रा द उ ष
 पो ॥ श र पं च क र्ते उ ला म द ने ॥ कां ज प मा न र्थी पा च व च ने ॥ स र ली च तु रा ह र ३ ॥ १६ ॥ ए सी म ता
 न्या श र पा ते ॥ मु र्ख ना आ ति अं ग रा ते ॥ हे रे खो नि जा बु वं ते ॥ म त्तु र क्षे ता उ ला ॥ १७ ॥ श क्ष स स
 ब छ ज सा धा र ण ॥ प उ त या द मा वे के ले ख र ३ ॥ पु णि ला उ नि ति क्ष ण बा ण ॥ सु वे चि सं धा न
 के ले ॥ १८ ॥ ते ग र्ज त जा क्रा म उ वी ॥ जे ता वि र उ ता आ वो वी ॥ ये उ नि वें स ले व क्ष र्ख वी
 जा बु वं ता पिये ॥ १९ ॥ ते पो वे धा पा वे ला र ३ ॥ ते थे स वा क्ष उ ना हो ता स ह जु ॥ तो पा शा न प
 उ नि म ता उ जु ॥ धा वि न ला ख रे ॥ २० ॥ जे वा उ नि उ र्ध ह स्ते ॥ ब वे टा किले पा शा ना ते ॥ आ सि य
 ता दे खो नि म ते ॥ फो डि ले व र न्या व रि ॥ २१ ॥ स वे चि स ज्जु नि सो डि ला बा ण ॥ जो ज स्सि सु र व
 ति क्ष णु ॥ नी याला जे सा ग णु ॥ ह तां ता चा ॥ २२ ॥ ग र्ज त ग ग ना न्यां पो वी ॥ क पि भ पा तु र दे खो नि
 द खी ॥ तो अ क स्मा न ग वा क्षा चाल न्हा वी ॥ ये उ नि य भे द ला ॥ २३ ॥ प र्व त अं गि जे सि वि जु प उ ली
 ते सा वा न्तर जे द ला क पो वी ॥ ते षो ग वा क्षा सि मु र्खे ना आ वी ॥ प उ त प उ त वें स ला ॥ २४ ॥

(6)

ऐसे कुरुनियामहामत्तु ॥ अधिकपपोषिमगर्जतु ॥ तवतारातनयो वाळीसुतु ॥ सावधजाला
 मत्ताचेवेनवरेखिलेउळा ॥ मगयुद्धासिजालाउत्तावळा ॥ परिप्रातप्रतयवेळा ॥ येउनि
 धाधिनळा ॥ पादिधलीकृत्पातआसेळी ॥ तेपोळिदककृर्णिपउलीटाळी ॥ मत्तापियारधा
 जवळी ॥ आळापवणावेगे ॥ पापुठेपरिप्रातकुनिअंवरि ॥ टाकिलावळे मत्तावरि ॥ जेसपु
 रंधरपर्वतशिखरि ॥ निजआयुधहाने ॥ तयापरिप्रातेतकाळ ॥ चूर्णजालेमत्ताचेसि
 साळ ॥ जेसेपाशानप्रहारेनारिकेळ ॥ सबकसुर्गहाडनिजाय ॥ ८ ॥ निर्वाणजालियामत्ता
 ते ॥ पुनरपितैसेविवाळीसुते ॥ दुसरेनिजसुवाते ॥ अश्वसारथियातेवधिले ॥ ९ ॥ ऐसा
 मत्ताचाजालावधु ॥ रणमंडळीप्रसिध ॥ राजानलावान्तरशिंधु ॥ ध्वनिभरलादाहाहीदिशा ॥
 चौपहिअतिपराक्रमी ॥ जेहिसुरजीविलेसुतासो ॥ तेकपोकरेपउलेरणभुमी ॥ सावणादे
 खता ॥ १० ॥ चोपाचावधुदेखोनि ॥ पुढलेकेषुविचारिमनी ॥ कोकिनाहोरणमेदिनी ॥
 पुद्गलागिराक्षेसामध्ये ॥ ११ ॥ प्राहाहाकसेजाले ॥ राज्यलेकेवेबुडोवैसले ॥ जाक्षेसमाहा
 तेआटले ॥ वानरविक्रमे ॥ १२ ॥ जसोहोपारहेवबिर्वंत ॥ तेजवायासेहोविलागत ॥
 ऐसेविचारुनियामित्त ॥ सावणेउरउठेविले ॥ १३ ॥ सपुहानिआतापुरुषधर्मु ॥ देहपउते

68

कुरु संश्रामु ॥ तिउो मिआनिरामु ॥ रास्त्रावस्त्रिस्वरखा ॥ १५ ॥ विचारिता हाये कुरामु ॥ स क व वा
 मुळरमु ॥ याचिया विस्ताराचो विक्रमु ॥ ऐसाचिआहे ॥ १५ ॥ लक्षमणयाचे हो ये पुष्पा ॥ फुलतेसिते
 स्वरुप ॥ ज्ञास्त्राव्यते निकोप ॥ सुप्रिवआनिहनु मंतु ॥ १६ ॥ वरकउ रस्तवो न्नु र समस्ते ॥ पत्रेया
 चोअसंख्याते ॥ कितीचमजवाटते ॥ मकरं र आंगिचा ॥ १७ ॥ त्यामुळरमा चेजालियाखउण
 सर्वाचेसरिसेचोमरण ॥ ऐसेहणउनिधनुशबाण ॥ एतलेहाति ॥ १८ ॥ सारथियासिह्मणे लंक्र
 नाथु ॥ रामासन्मुखचालविरथु ॥ वानरपुरप्रयाहियथु ॥ वाहीनकोरेबाता ॥ १२ ॥ ऐसेबोलीला
 राक्षेसराजु ॥ रथुनेलारपुपतिउजु ॥ जैसा विहोसुवगजु ॥ बळेआला मरणाति ॥ २१ ॥ जातायु
 द्रसमयोरावणा ॥ राक्षिजागेल लक्षमणो ॥ एसाहेपुठिलजाणा ॥ कथेचेअनुसंधान ॥ १२२ ॥
 इतिश्रीवाल्मिकिनिर्मितरामायण ॥ युद्धकोउरिपरावरावउण ॥ परिसोतसुधाविंधुविवक्षणा
 ललदासमुहलक्षणे ॥ १२३ ॥ श्रीरामचंद्रार्पणमस्तु ॥ प्रा ॥ १५ ॥ वा ॥ १२३ ॥ प्रसंगसमाप्त ॥ १५ ॥





8

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com